बच्चों अपनी अवस्था अचल बनाओ और
बनाओ अडोल
समझा रहे हैं परम पिता हमें कहकर मीठे मीठे
बोल
और किसी की याद न आए दिल से बस मुझे
याद करो
एक के अंत में खो जाओ तुम मन में शुद्ध
संकल्प भरो
पुरुषोत्तम संगम युग में आकर देता हूँ मैं आत्म
ज्ञान
माया की छाया से बचाकर हर लेता हूँ मैं देह
अभिमान
अज्ञान निद्रा भंग करूँ मैं बनाऊं तुमको संपूर्ण
पावन
मुरली के माध्यम से तुम पर बरसाऊ मैं सुख
सावन
शांति धाम और सुखधाम का बतलाऊं मैं सीधा
रास्ता
इस रस्ते का नहीं किराया ये है बिलकुल ही

सस्ता
दुःख अशांति सा बचने की बतलाऊं मैं सरल युक्ति
एक आँख में मुक्ति हो दूजी आँख में जीवन मुक्ति
कामधेनु बनकर तुमको ज्ञान घास ही अब चरना है
ज्ञान जुगाली करते करते दुःख सबके अब हरना है
बाप हूँ मैं तुम बच्चों का अति गुप्त वेश में आता हूँ
मुक्तिधाम का पंडा हूँ सबको घर अपने ले जाता हूँ
परमधाम का वासी हूँ मैं माया से तुम्हें बचाता हूँ
सुख शांति का वर्सा देकर वानप्रस्थी बन जाता हूँ
याद मुझे तुम करते रहो ये कल्प कल्प समझाता हूँ
मेरी मत पर चलने वालों की मैं नैया पार

लगाता हूँ
याद करो वो जीवन अपना छप्पन भोग तुम खाते थे
पांच तत्व भी मिलकर तुम पर सुख सावन बरसाते थे
कौन तुम्हारा दुश्मन जिसने सुख चैन तुम्हारा लूट लिया
बदले में तुम बच्चों को पीड़ा कष्ट और दुःख दे दिया
कौन है वो दुश्मन तुम्हारा उसको ठीक से तुम पहचानो
क्या है उसकी फितरत रूप है क्या उसका तुम जानो
जिस दुश्मन ने लूटा है तुम बच्चों का सुख और चैन
दुखी किया जीवन सबका भरे आंसुओं से सबके नैन
पहचान मिलेगी उसकी तुम्हें जरा झांको अपने अंदर

दिख जायेंगे तुमको झट से काम क्रोध के बन्दर
मुक्ति पाना है इन सबसे तो अपने आप को
जानो
परमधाम के वासी हो तुम अपने घर को
पहचानो
हो जाओ देह से न्यारे बन जाओ तुम मेरे प्यारे
चलो मेरी मत पर अंगद समान अचल अडोल
बनकर
राह में आए माया तो करो मुकाबला उससे
डटकर
दिन आएगा बहुत जल्दी जब दुखों से मुक्ति
पाओगे
सतयुगी संसार में आकर विश्व महाराजा बन
जाओगे
ॐ शांति